भाषा शिक्षण | कुछ मज़ेदार प्रयास

ललिता यदुवंशी

पिछले कुछ वर्षों में मुझे हिन्दी भाषा सीखने-सिखाने के लिए कक्षा-1 और कक्षा-2 के साथ जुड़ने का मौक़ा मिला। बच्चों के व्यवहार के गठन में और उनकी क्षमताओं के विकास में भाषा विशेष भूमिका अदा करती है। चूँकि बच्चों और उनकी भाषा के बीच का सम्बन्ध उनके अनुभवों पर निर्भर करता है, इसलिए यह सम्बन्ध उन चीज़ों पर निर्भर करता है जिनके वे सम्पर्क में आते हैं। मैं अपनी कक्षा में बच्चों के अनुभवों को शामिल करने और उन्हें कक्षा के संचालन में जोड़ने का प्रयास करती हूँ।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में कई तरह की गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है। लेकिन किसी भी गतिविधि को अपनाने का सोचा-समझा कारण होना चाहिए। मैंने कई अभिनव तरीक़ों से सामग्रियों को उपयोग करने का प्रयास किया है और ये निरन्तर जारी हैं। गतिविधियाँ, जैसे मौखिक अभिव्यक्ति और समाचार (अज़ीम प्रेमजी स्कूल समाचार), भ्रमण, कहानी सुनाना, कविता पाठ, साझा पाठ, निर्देशित अध्ययन, अनुभवों के बारे में लिखना, भाषा-खेल, द्विभाषी बातचीत सहित और भी बहुत कुछ एक योजना के अनुसार चरणबद्ध तरीक़े से मेरी कक्षा में आज़माए गए हैं। ऐसा करने से, मुझे कई चुनौतियों पर विचार करने का अवसर मिला और इन्हें सहकर्मियों के साथ साझा करने पर, मुझे और गतिविधियों की योजना बनाने का मौक़ा मिला। भाषा शिक्षण के दौरान, मेरा प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना रहता है कि वे जो कर रहे हैं उसका क्या महत्त्व है, ताकि संवाद के अवसरों को सार्थक बनाया जा सके।

मैं चार अभ्यासों को साझा करना चाहूँगी जो मेरी कक्षा शिक्षण के अंग रहे हैं।

1. डायरी हाउस

बच्चों के पास कई अनुभव होते हैं। वे अपने मन की हर उस बात को उसी उत्साह के साथ सभी से साझा करना चाहते हैं जितना वे स्वयं महसूस करते हैं। कक्षा-2 में 30 छात्र-छात्राएँ हैं, इसलिए हमने तय किया कि हर दिन पाँच विद्यार्थी पूरी कक्षा के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। इसके बाद, बाक़ी विद्यार्थी जोड़ियों में एक-दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। फिर, इन अनुभवों को मिलकर लिखेंगे जिसे एक डायरी हाउस में रखा जाएगा।

हमने कक्षा में एक डायरी हाउस बनाया। रंगीन काग़ज़ के टुकड़ों को चिपकाकर इसे सजाया गया था। कक्षा में हर दिन

चित्र-1 : डायरी हाउस।

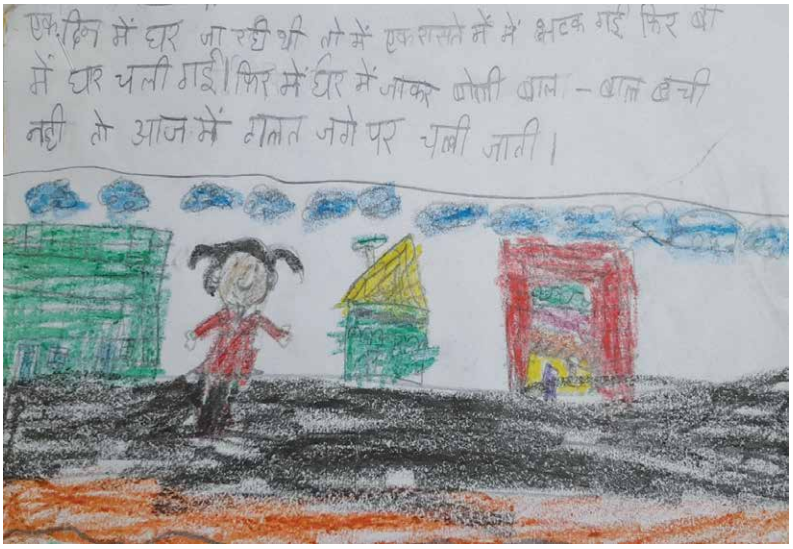

चित्र-2 : डायरी हाउस के लिए एक बच्चे का काम।

चित्र-3 : *डायरी हाउस के लिए एक अन्य बच्चे का काम।*

विद्यार्थी काग़ज़ के एक टुकड़े पर अपने अनुभव लिखते या घर में लिखे गए किसी अनुभव को लाकर उसमें रखते थे।

वे चित्र बनाते और रंगते थे और दूसरों को दिखाने के बाद उन्हें डायरी हाउस में रखते थे। कक्षा-2 में इस तरह अनुभवों को लिखना बाद में विद्यार्थियों को डायरी लिखने के लिए प्रेरित कर सकता है। अपने अनुभवों को मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त करने के अवसरों को, सहज रूप से ख़ुद को प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता के रूप में देखा जाता है।

2. कहानी लेखन और प्रश्न बनाना

इस गतिविधि का प्राथमिक उद्देश्य कहानियों को समझ के साथ पढ़ना और फिर प्रश्न बनाने में बच्चों की मदद करना था। इसमें उनकी कब, क्यों, कहाँ, कैसे, कौन, इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने और इसी तरह के और प्रश्न बनाने की क्षमता शामिल है। इसके साथ ही, उन्हें कक्षा में अपनी कहानियाँ बनाने के भी अवसर दिए गए – वे चित्रों की मदद से कहानियाँ गढ़ते हैं, एक-दूसरे की कहानियाँ सुनते हैं और उन्हें लिखते भी हैं।

कहानी गढ़ने के बाद, उन्होंने उसी कहानी से जुड़े सवाल भी बनाए। सवाल बनाने की इस गतिविधि के दौरान कुछ अवलोकन सामने आए, जैसे कि 30 में से 21 विद्यार्थी सही वाक्य संरचना के साथ सवाल बना पा रहे थे, जबकि शेष के साथ प्रश्नवाचक शब्द के सही स्थान (बच्चे वाक्य की शुरुआत में प्रश्नवाचक शब्द लिख रहे थे) पर चर्चा करनी पड़ी।

इसके बाद, मैं उनकी लिखी हुई सामग्री से सभी के लिए पढ़ने की सामग्री तैयार करती थी। ऐसा करने से, हम विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार उपयुक्त पठन सामग्री बना सकते थे। सभी बच्चों को उनकी अपनी कहानियाँ (मेरे द्वारा थोड़े से बदलाव के साथ) पढ़ने (की समझ) के लिए कार्यपत्रों (वर्कशीट) के रूप में दी गईं।

3. किताबों का पेड़

कक्षा-2 के विद्यार्थियों में पढ़ने का आनन्द जगाने के लिए, 'कहानी का समय' रखा गया। उन्हें बरखा सीरीज़ की तीन और चार लाइन वाली किताबों से कहानियाँ सुनाई गईं। धीरे-

धीरे हम प्रथम, एकलव्य, कथा, तूलिका और अन्य प्रकाशनों की कहानियों की ओर बढ़े। इसके साथ ही, हमने इकतारा के बड़े चार्टों का उपयोग करके कविता पाठ पर भी काम किया और बच्चे इन्हें अपने ख़ाली समय में मिलकर उत्साहपूर्वक पढ़ते हैं।

बच्चों ने सुझाव दिया कि उन्हें पेड़ के नीचे पढ़ने में मज़ा आता है, इससे मुझे कक्षा में 'किताबों का पेड़' बनाने की प्रेरणा मिली। 'किताबों का पेड़' पेड़ की सूखी शाखाओं से बना होता है जो एक पेड़ की तरह ही लगता है। यह कक्षा के एक कोने में रखा होता है जिस पर किताबें लटकाई जाती हैं, यह बच्चों को नई किताबें खोजने और पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। बच्चों ने किताबों के बेहतर रखरखाव के लिए एक 'किताबों का अस्पताल' भी बनाया, जहाँ फटे पन्नों को चिपकाया गया और उनकी मरम्मत की गई और किताबों को अच्छी तरह से रखा गया।

पुस्तकालय में भी बच्चों को उनके स्तर के अनुसार उपयुक्त साहित्य से अवगत कराया गया। उन्होंने जिन किताबों को पढ़ने में रुचि दिखाई, उन्हें कक्षा में लाया गया और सावधानी से 'किताबों के पेड़' पर टाँग दिया गया। बच्चे रोज़ाना 'किताबों के पेड़' से अपनी पसन्दीदा किताबें पढ़ते थे।

अब स्थिति यह है कि अगर कक्षा ख़त्म होने में सिर्फ़ पाँच मिनट बाक़ी हैं, तब भी वे उत्साहपूर्वक पूछते हैं : दीदी, क्या हम किताबें पढ़ सकते हैं? क्या हम पेड़ से किताबें ले सकते हैं?

4. शनिवार विशेष

नियमित रूप से गतिविधियों में नवीनता लाई जाती है, ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव और अपने भाषा कौशल को स्वयं उन्नत करने के अवसर मिल सकें। कक्षा-1 और कक्षा-2 के शिक्षक प्रत्येक महीने के दो शनिवार को एक साथ मिलकर ऐसी गतिविधियों का संचालन करते हैं, जिनमें भाषा के साथ-साथ अन्य विषय भी शामिल होते हैं।

किसान परिवार और कृषि : बातचीत

जब हम किसान के ऊपर एक कविता पर काम कर रहे थे, तब खेती से जुड़े परिवारों के सदस्यों को आमंत्रित किया गया था। विद्यार्थियों में से एक के दादाजी ने बच्चों के सवालों का

चित्र-4 : *कक्षा में पुस्तकों का पेड़।*

चित्र-5 : *किसान परिवारों के साथ बातचीत करते हुए विद्यार्थी।*

जवाब दिया। वे अपने साथ दिखाने के लिए अलग-अलग बीज लाए और बीज बोने के लिए खेत तैयार करने के बारे में बताया। बच्चों ने पढ़ी गई कविता के आधार पर बहुत सारे प्रश्न पूछे, जिसने चर्चा को सार्थक बना दिया। बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा साफ़ झलक रही थी।

ख़ाना-ख़ज़ाना : परियोजना कार्य

कक्षा-1 में 'आलू की सड़क' और कक्षा-2 में 'मूली' की कहानी पढ़ने के दौरान हमने व्यंजन बनाने की बात की। आलू और मूली के पराठे बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री पर चर्चा की और उन्हें बनाने की विधि को करके देखने का प्रयास किया। बच्चों ने कुछ बहुत अच्छे प्रयास किए। फिर कक्षा में अन्य सामग्री और वस्तुओं को शामिल करके इसे लिखित कार्य के रूप में दिया गया और विद्यार्थियों द्वारा इसकी रेसिपी लिखी गई।

पढ़ने का अभियान

कक्षा-1 और कक्षा-2 के विद्यार्थियों को तीन समूहों में बाँटा गया था। पुस्तकालय की किताबों का उपयोग करके और समूह की क्षमता (स्तर) और उनकी रुचियों के आधार पर गतिविधियों को शामिल किया गया, जैसे साथ में पढ़ना, पढ़ने में मदद करना, मात्राओं के उपयोग में स्पष्टता लाना। कहानी पढ़ने के बाद बच्चों ने उपयुक्त हाव-भाव और अभिव्यक्ति के साथ उसे सुनाने का अभ्यास किया। चारों दिशाओं से आती हुई उनकी आवाज़ें सुनकर हम सभी शिक्षक अपने आपको मुस्कराने से रोक नहीं सके – एक तरफ़ से हाथियों की आवाज़ें आ रही थीं और दूसरी तरफ़ से बकरियों की। उस दिन, हम सब एक साथ इकट्ठे हुए और हमने मिलकर स्कूल के एक हिस्से में किताबों का प्रदर्शन किया। बच्चों ने बड़े डिस्प्ले चार्टों (हमारे पास इकतारा प्रकाशन के चार्ट हैं जिनमें छोटी कहानियों और तुकबन्दियों को चित्रों और बड़े फोंट का उपयोग करके दिखाया गया है) से बड़े उत्साह के साथ कहानियाँ प्रस्तुत कीं और पढ़ा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा – फ़ाउंडेशनल स्टेज (NCF-FS) में इस बात को रेखांकित किया गया है कि बच्चों को संवाद (बातचीत), कहानियों और कविताओं के माध्यम से सीखना अच्छा लगता है। ये उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा और गहराई से सोचने की कुशलता और मूल्यों के विकास में मदद करते हैं, ख़ासकर जब उन्हें सोचने, अनुमान लगाने, प्रश्न पूछने और परिकल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ललिता यदुवंशी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में भाषा की शिक्षिका हैं। वे वर्ष 2005 से अध्यापन कार्य कर रही हैं। उन्होंने शिक्षा और हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की हैं। पढ़ना, संगीत सुनना और नई जगहों पर घूमना उनकी रुचियों में शामिल है। उन्हें बच्चों के साथ बातचीत करना पसन्द हैं। उनसे *lalita.yaduvanshi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विजय सेन **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर** : अनुज उपाध्याय